Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue – 2015

सूचना संप्रेषण तकनीक की जगत की शांति शिक्षा में योगदान

प्रमोद कुमार पाण्डिया*

शोध सार (Abstract)

सारे जगत को सूचना संप्रेषण तकनीक ने एक गांव के समान सुगम और आसान बना दिया है। वैश्वीकरण का सपना साकार कर दिया है।, सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक गतिविधियों में अहम भूमिका सूचना संप्रेषण तकनीक की होती है। शांति और संघर्ष दोनों में सूचना संप्रेषण तकनीक की भूमिका निर्णयात्मक साबित होती है। सकारात्मक पक्ष को ले तो सूचना संप्रेषण तकनीक टूटे हुए दिलों को जोड़ सकती है, दूर पड़े दिलों को नजदीक ला सकती हैं, वहीं पलक झपकतें ही जुड़े हुए दिलों को तोड़ तथा नजदीक दिलों को दूर ले जाने का काम भी कर सकती है। वैयक्तिक शांति से लेकर राष्ट्र और जगत शांति में सूचना संप्रेषण तकनीक अहम् भूमिका निभाती है।

सूत्र शब्दः शिक्षा शांति, जगत, सूचना संप्रेषण तकनीक (ICT)।

परिचय

ऐसी तकनीक जिसके माध्यम से सूचना तक पहुँच बनती है उसे सूचना संप्रेषण तकनीक कहते है उससे वैसे तो यह सूचना तकनीक (IT) की भांति ही होती है लेकिन यह मूलतः सूचना संप्रेषण पर आधारित होती है। सूचना संप्रेषण तकनीक में इंटरनेट, वायरलेस नेटवर्क, सैलफोन तथा अन्य तकनीक के साधन सम्मिलित होते है। हाल के वर्षो में समाज को सूचना संप्रेषण तकनीक के विभिन्न साधन मिले है। जैसे संदेश (Message) करना, वेबसाईट, वीडियो कॉन्फ्रेंसिग, फेसबुक, वाट्सअप इत्यादि। इन साधनों की बदौलत स्थान की दूरी का महत्व खत्म हो गया है, वहीं समय की बचत भी बहुत हुई है। इन साधनों का समाज के सम्प्रेषण व आपसी व्यवहार में असर पड़ा है और उससे शांति शिक्षा भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी है।

जगत में शांति शिक्षा का महत्व

जगत की महानतम पुस्तक भगवत गीता के द्वितीय अध्याय के श्लोक संख्या 66 में भगवान श्रीकृष्ण ने शांति शिक्षा का आधार समझाते हुए कहा है 'शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्'।[1] (अर्थात शांति रहित मनुष्य को सुख कैसे मिल सकता है।)

मानव जाति का इतिहास संघर्ष और युद्धों का रहा है। युनिसेफ के शांति शिक्षा कार्यकारी दल शांति शिक्षा के बारे में कहा ''यह एक ऐसी प्रक्रिया जो कि संघर्श और हिंसा को हटाने के लिए ज्ञान, कुशलता, दृश्टिकोण और मूल्यों को प्रोत्साहित करती है।''[2] प्राचीन व मध्यकालीन युग में तो रोजमर्रा की जिंदगी में भी इनसे ही जूझते रहते थे। आधुनिक युग में प्रथम व द्वितीय जगत युद्ध ने करोड़ों जिंदगियों के दीपकों को बुझा दिया और अरबों लोगों की जिन्दगी में चेन और शकुन खत्म कर

सहायक प्रोफेसर, बी.टी.टी. महाविद्यालय, आई. ए. एस. ई. विश्वविद्यालय, सरदारशहर।
E-mail Id: pkpandia2015@gmail.com

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

दिया। संघर्ष और युद्धों की काली छाया ने शांति का महत्व ही रेखांकित किया है। इसका महत्व भी काफी मुश्किल दोर से गुजरने के बाद में समझ में आया है। महात्मा गांधी ने शांति शिक्षा को सत्य और अहिंसा से जोड़ा और उसके बारे में कहा, ''मेरे पास आपको पढ़ाने के लिए कुछ भी नहीं है, सत्य और अहिंसा उतनी ही पुरानी है जितने कि पहाड़ियां। अहिंसा और सत्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अहिंसा किसी दूसरे की बुद्धिमता, भाशण या कार्य को अपने विचारों, कथन या कर्म या किसी के जिंदगी को वंचित नहीं करना होता है।** "I have nothing new to teach you... Truth and non-violence are as old as hills. Non-violence and truth are two sides of one coin.... Non-violence consists in not hurting some other one"s intellect, speech or action through one"s thought, utterance or deeds and not deprive some one of his life." [3]

जगत के परिपेक्ष्य में बात करें तो यह सर्वविदित है कि जगत जाति, धर्म, भाषा, वर्ग, रंग, भूगोल, राजनीति, विचारधारा, दर्शन, नागरिकता जैसे अनेकानेक मुद्दों पर भिन्नता लिये हुये है, और यही विभिन्नता अनेकों बार संघर्ष और युद्ध का कारण बन जाती है। एक समूह दूसरे समूह की बात को सुनने के लिए तैयार ही नहीं है क्योंकि उसने पूर्वाग्रह ग्रस्त होकर यह मानस बना लिया होता है कि जो कुछ वह जानता है और उसकी अनुभव की परिधि में है, वह ही सर्वथा उचित तथा सर्वोतम है तथा इसके विभिन्नता से उसके अस्तित्व पर असर पड़ रहा है। अतः उसका उन्मूलन करना ही समस्या का समाधान है।

संयुक्त राश्ट्र संघ के चार्टर की प्रस्तावना (Preamble of UN Charter) में शांति शिक्षा के लिए कहा गया है '' यह मानव व्यक्तित्व के पूर्ण विकास, मानव अधिकारों एवं मूल स्वतंत्रताओं को सुदृढ़ करने के लिए निर्देशित की गई है। (Peace education is directed to the full development of the human personality and to the strengthening of respect for human rights and fundamental freedoms.)[4] ऐसी स्थिति में शांति शिक्षा का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। शांति शिक्षा के जरिये सहिष्णुता तथा उच्च विचारों का सृजन किया जा सकता है तथा झगड़ने वाले व्यक्तियों, समूहों, देशों को विभिन्नता के कारण तथा इसके होने वाले लाभों से परिचित करवाया जा सकता है।

शांति बनाम अशांति

शांति और संघर्ष के विषय में सयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में कहा गया है कि युद्ध और शांति मनुष्य के मस्तिष्क में है। युनिस्कों (UNESCO) की प्रस्तावना में लिखा गया है, '' चूँकि युद्ध मानव के मस्तिश्क से शुरू होते हैं, इसलिए शांति की रक्षा मानव के मस्तिश्क में निर्मित होती है। "Since war begins in the minds of men, it is in the mind of men that the defense of peace must be constructed."[5]

शांति एक वृहद अवधारणा है तथा इनका निहितार्थ मानसिक शांति से है। गलती से यह अर्थ लगा लिया जाता है कि यदि युद्ध नहीं हो रहा है या संघर्ष नहीं हो रहा है तो शांति है। यह अर्थ वैसा ही है जैसा कि कोई यह बता रहा हो कि उसके घर का रंग काला नहीं है तो श्रोता इसका अर्थ यह लगा ले कि काला नहीं है तो फिर घर का रंग सफेद है। वास्तिविकता यह है कि सैकड़ों अन्य रंग भी घर में किया जा सकते है। सारांश मे शांति के लिए जरूरी है कि वहां पर शांति हो तथा संघर्ष की स्थिति नहीं बनी हुई हो। जहां तक संघर्ष का अर्थ है उसका जन्म तब होता है जब विरोध, मतभेद तथा मनमुटाव जैसी स्थिति बन जाती है। एक समूह दूसरे समूह के विरोध में उतरकर अपनी बात को जायज

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

और नाजायज दोनों तरीकों से न्यायोचित ठहराने में लग जाता है। परिणामतः दोनों समूह अपनी बात को मानसिक और शारीरिक क्रियाओं से मनवाने लग जाते है और संघर्ष शुरू हो जाता है। ष

शान्ति और अशांति में तकनीक

एक युग था कि शहर की दूसरी गली में या फिर यहां तक कि पड़ौस के घर में क्या हो रहा है, जल्दी से ज्ञात नहीं होता था। इसलिए शांति और संघर्ष का पैमाना नितांत स्थानीय तथा सीमित था। परंतु कालांतर में सूचना संप्रेषण तकनीक का आविष्कार हुआ और इसके साथ ही संप्रेषण के स्तर और मात्रा दोनों में ही फर्क आ गया। आज स्थिति यह है कि घर के कमरे में भी जरा सी कहा सुनी होती है तो भारत के गांव में रहने वाला अपने रिश्तेदार को जो कि देश की राजधानी में बैठा है या फिर जगत के किसी ओर देश जैसे अमेरिका या आस्ट्रेलिया में, उसे तुरंत सूचना कर सकता है कि घर में क्या हो रहा है। इसी के साथ वैयक्तिक और सामूहिक संघर्ष का स्तर तथा स्वरूप में फर्क आ जाता है। फोन, इंटरनेट, वीडियो कॉन्फ्रेसिंग, सेटैलाईट फोन जैसे अनके साधनों से युद्ध और शांति में सूचना संप्रेषण तकनीक की भूमिका के बारे में साधारण लोग भी परिचित है। वे भी साधारणतः इन साधनों का प्रयोग करते है। सूचना संप्रेशण तकनीक कितनी सशक्त माध्यम है और कितनी सार्थक काम कर सकती है, इसका जीता जागता उदाहरण पाकिस्तान आतंकवाद की शिकार बालिका मलाला के रूप में मिला। अपने गांव तक में न जानने वाली लड़की को नोबेल पुरस्कार दिला कर उसके संदेश को जो कि उसने पुरस्कार लेते हुए कहा था, को सभी तक संप्रेशित कर दिया, ''9 अक्टूबर, 2012 को तालिबानियों ने मेरे को गोली मारी, उन्होंने सोचा कि गोलियां मुझे शांत करेगी। लेकिन वे असफल रहे। क्योंकि उस नीरवता से हजारों आवाजें पैदा हो गई।'' आज अरबों आवाजों के मूल में सूचना संप्रेशण तकनीक ही है। ''On October 9, 2012,Talibanis shot me. They thought the bullets would silence us, but they failed. Out of that silence came thousands of voices."[6] एलिस बाउल्डिंग ने शांति शिक्षा के बारे में कहा '' मानव ने युद्ध अंतर्निहित नहीं है। हम युद्ध सीखते है, हम शांति भी सीखते हैं। शांति की संस्कृति कुछ ऐसी है जिसे सीखा जाता है। ठीक जैसे कि हिंसा और युद्ध की संस्कृति को सीखा जाता है। "War is not inherent in human beings. We learn war and we learn peace. The culture of peace is something which is learned, just as violence is learned and war culture is learned."[7] सूचना संप्रेषण तकनीक की युद्ध और शांति में भूमिका हैः–

अंतःक्रिया में फायदा

सूचना संप्रेषण तकनीक ने हर एक दूसरे को नजदीक ला दिया है। आज संप्रेषण के युग में सोशल मीडिया के मार्फत अपनी बात को दूसरे तक आसानी से संप्रेषित कर रहा है। ऐसे में सुख और दुख, युद्ध और शांति दोनों की बातों को साझा किया जाता है तथा एक दूसरे से राय मशविरा चलता रहता है। इसका फायदा शांति के प्रयासों में तथा नुकसान संघर्ष के बढ़ाने में देखने को मिल सकता है।

स्वरूप और मांग

मीडिया के युग में शांति और संघर्ष के स्वरूप में भारी परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है। आज के युग में युद्ध और शांति दोनों के स्तर में परिवर्तन आया है। मौटे तौर पर कहा जाये तो आज शांति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था से लेकर युद्ध के

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

लिए भी विभिन्न स्तरों पर संघर्ष देखने को मिलते है।

संप्रेषण सस्ता तथा सुगम

पैदल और घोड़े पर चलने वाला कितना और कितनी दूरी तक संप्रेषण कर सकता था, यह बात तो समझ में आती ही है। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि इनमें कितना ज्यादा खर्च तथा समय लगता था, यह भी किसी से छुपा हुआ नहीं है सूचना संप्रेषण तकनीक की वजह से संप्रेषण काफी सस्ता तथा सुगम हो गया है जो कि शांति और संघर्ष दोनों में ही प्रभावी भूमिका निभाती है।

वैश्विक पहुँच

सूचना संप्रेषण तकनीक ने सारे जगत को एक गांव की तरह आपस में जोड़ दिया है। आज संप्रेषण के लिहाज से दूरी कोई खास मायना नहीं रखती है। इसका मतलब सीधा सा यह है कि साधनों से संघर्ष को हटाने के लिए भी प्रयत्न हो सकता है या फिर संघर्ष को विस्तार देने के लिए भी सहायता, मार्गदर्शन मिल सकता है। परन्तु शांति और संघर्ष के लिए प्रयासों की मांग और स्तर में निश्चित रूप से फर्क आ गया है।

त्वरित प्रत्युतर

वर्तमान मीडिया युग है और इस वजह से तुरंत ही घटना के बारे में या अन्य सूचनाओं को संप्रेषित किया जा सकता है। परिणामतः इसका प्रत्युतर भी तुरंत आ जाता है जिससे निर्णय संबधी विलम्ब काफी कम हो गया है।

निर्णय संबंधी प्रक्रिया में तेजी

जब किसी के पास तेज गति से सूचना पहुँचती है तो उसको निर्णय लेने में सहायता मिलती है। पूर्व में सूचना संप्रेषित करने के साधन ही नहीं थे तथा जो थे भी वे बहुत परंपरागत तथा मंदगति के थे जिसके कारण युद्ध और शांति में अलग तरह का प्रभाव पड़ता था। आज किसी से भी सहायता तुरंत ली और दी जा सकती है।

अशांति के कारण व उपाय

शांति के लिए शिक्षा विशय पर राश्ट्रीय फोकस समूह (National Focus Group on Education for Peace- NCERT, 2006) ने शांति शिक्षा के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये–

भाषा

'मेरी भाषा दूसरों की भाषा से श्रेष्ठतर हैं,' यह भाव भी संघर्ष को जन्म देता है। भारत में कई बार ऐसी टकराव की स्थिति पैदा हुई कि भाषा के नाम पर रक्तपात हुआ और देशभर में उपद्रव शुरू हो गये।

प्रान्तीयता

प्रान्तीयता तथा क्षेत्रियता का संकीर्ण भाव भी संघर्ष को जन्म देता है। मानव–मानव के बीच में खाई पैदा हो जाती है और स्वार्थी तत्व अपना उल्लू साधने में लग जाते है।

सांप्रदायिकता व रीति रिवाज

सम्प्रदाय और रीति–रिवाज की आड़ में भी संघर्ष की चिनगारी कई आशियानों को जला देती है। जाति भी वर्ग भेद को बढ़ाती है। महात्मा गांधी ने शांति शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सही कहा है, ''रीति–रिवाज के पानी में तैरना अच्छी बात है लेकिन इस रीति रिवाज के पानी में डूबना आत्महत्या जैसा है। "It is good to swim in the waters of tradition, but to sink in them is suicide."[8]

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

शिक्षा

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को शांति की संस्कृति को भारतीय इतिहास, दर्शन और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पढ़ाना चाहिए। पढ़ाई का मुख्य बिन्दु शांति को जीवन जीने के तरीके में बदलना होना चाहिए। विभिन्नताओं को आदर भाव से ग्रहण करना आना चाहिए।[9]

धर्म

कुछ धर्मावलम्बी अपने धर्म की श्रेष्ठता साबित करने के लिए दूसरों को नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं। कई बार उनका धर्मांतरण कराने की भी कोशिश करते है।

राजनैतिक विचारधारा

सत्ता आदमी को भ्रष्ट बनाती है और पूर्ण सता पूर्ण भ्रष्ट बना देती है। राजनीति में सत्ता की लड़ाई चलती रहती है और इसके लिए उचित–अनुचित कुछ नहीं देखकर संघर्ष और प्रेम दोनों का छलपूर्वक सहारा लिया जाता है।

अन्य

अर्थ जगत की धूरी है इसके लिए अनर्थ होता रहता है। कई लोगों के लिए सही और गलत मायना नहीं रखता बल्कि पैसा ही सबकुछ होता है। इसी प्रकार आपसी मनमुटाव, गुटबाजी, अपराधी मनोवृति, ईर्ष्याभाव, कट्टरता, मनोविकृति, घृणा इत्यादि संघर्ष को पनपाते है।

शान्ति और अशांति में तकनीक

पूर्व में भी चर्चा हो चुकी है कि सूचना संप्रेषण तकनीक एक साधन है जिसका उपयोग और दुरूपयोग उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है।

एक मोबाईल फोन के सहारे एक मरीज को बचाने के लिए डॉक्टर को भी बुलाया जा सकता है तथा वहीं एक आदमी की जान लेने के लिए एक हत्यारा को भी फोन पर बुलाया जा सकता है। फोन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, वेबसाईट, कॉन्फ्रेंसिग इत्यादि की संघर्ष के समाधान व बढ़ाने में बहुत बड़ी भूमिका होती है। सारे विश्व में शांति का संदेश सूचना संप्रेषण तकनीक से संभव है। मूल्यपरक बातों को प्रभावी रूप से ओरों के सामने रखा जा सकता है।

गांधी, बुद्ध से लेकर मार्टिन लुथर, नेल्सन मंडेला का जीवन चरित्र व दर्शन बड़े ही प्रभावोत्पादक तरीके से पुस्तुत किये जा सकते है। 'मानव–मानव एक है' का नारा तर्क और आंकड़ों के जरिये सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। वहीं आंतकवादी व अपराधी सूचना संप्रेषण तकनीक के साधनों को विनाशकारी कामों में झोंक सकते है, और इसके दुरूपयोग के प्रमाण समय समय पर प्रकाश में आते रहते है।

सुझाव

साधन का उपयोग हो, न कि दुरूपयोग। इसके लिए सभी संबंधित पक्षकारों को सजग रहने की जरूरत रहती है। इसके लिए कुछ उपाय किये जा सकते है :–

सभी वर्गो को जोड़ना तथा विकसित करना

महिलाओं, नौजवानों, वंचित वर्ग, गरीब, शिक्षित, समाज के सभी धर्म, जाति के जनों को आपस में जोड़ते हुए यह समझ विकसित करनी होगी आपसी समझ तथा शांति मूलक प्रयास सभी के हित में है तथा सूचना संप्रेषण तकनीक का प्रयोग इसी दृष्टिकोण से करना है।

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

शिक्षा में सूचना संप्रेषण तकनीक का प्रयोग बढ़ाना

नन्हा बच्चा जल्दी संस्कारित और प्रभावित होता है। सकारात्मक प्रभाव डालने वाली विषय सामग्री प्राइमरी कक्षाओं से टी.वी. व इंटरनेट जैसे माध्यमों से दिखाई जानी चाहिये।

सार्वजनिक कार्यक्रमों में शांति मूलक कार्यक्रमों पर जोर

सभी राष्ट्र और मीडिया से जुड़े व्यक्तियों को नीतिगत निर्णय लेना चाहिये कि मानवता के कल्याण के लिए आपसी भाईचारा, सर्वधर्म भाव, समानता, न्याय इत्यादि विषयवस्तु पर जोर रखते हुए सार्वजनिक कार्यक्रम जो कि टी.वी., वेबसाईट पर दिखाने अनिवार्य हो। उल्लंघनकर्ता पर गंभीर कार्यवाही प्रस्तावित हो।

सोशल मीडिया नियमन

संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी जगत संस्था से लेकर एक साधारण नागरिक तक को जागरूक होना पड़ेगा तथा जागरूकता बढ़ानी पड़ेगी कि सोशल मीडिया का उपयोग ही हो। सबको मिल बैठकर इसके नियमन की व्यूह रचना बनानी होगी। सोशल मीडिया रूपी दैत्य को मानवता नष्ट करते हुए नही देखा जा सकता। 'जहां चाह वहां राह' वाली उक्ति यहां पर भी लागु होती है।

अन्य

उभरते हुए जगत में कई बार राष्ट्र या समाज अपने बलबूते पर सूचना संप्रेषण तकनीक का नियंत्रण व नियमन नहीं कर सकता। लेकिन निराशभाव से जैसा हो रहा है, उसको होने दो यह भाव भी भविष्य के लिए अच्छा नही है। इसलिए सारे जगत को गंभीरता से सभी पहलूओं पर गोर करते हुए सुधार के लिए कदम उठाने चाहिए। हाल ही में अमेरिका में एक महिला को इसलिए डायन करार कर दिया गया क्योंकि वह भारतीय योग और संगीत की साधना करती थी। यह सब प्रकाश में सूचना संप्रेषण तकनीक से ही संभव हो पाया। निश्चित रूप से आने वाले समय में गलत धारणाओं को विराम मिलेगा और सूचना संप्रेषण तकनीक से योग और संगीत के लाभ अनभिज्ञ लोगों तक पहुँचेंगे तो वो ऐसा बर्ताव नही करेंगे। यह उदाहरण यही साबित करता है कि सूचना संप्रेषण तकनीक जहाँ कहीं भी विसंगति को देखता है तो वह सार्वजनिक क्षेत्र में इसको उजागर कर देता है जिससे दुरूपयोगकर्ता को लम्बे समय तक समर्थन नहीं मिल पाता और वह हतोत्साहित होता है और मानव कल्याणकारी गतिविधियाँ ही बढ़ती है। [10] जॉन मिल्टन ने शांति और युद्ध दोनों के लिए योग्य बनाने पर शिक्षा की अपेक्षा के बारे में सटीक लिखा मैं पूर्ण और उदार शिक्षा उसे कहता हूँ जो मनुष्य को शांति और युद्ध काल के लिए समस्त व्यक्तिगत एवं सामाजिक कर्तव्यों को चतुरता, औचित्य तथा उदारता से पूरा करने के योग्य बनाती है। "I call, therefore, a complete and generous education that which fits a man to perform justly, skillfully and magnanimously all the offices both private and public in peace and war"[11]

निष्कर्ष

शांति शिक्षा का उद्देश्य हिंसा समाप्त करना, संघर्षो का प्रबंधन करना, वैयक्तिक, सामूहिक, सामाजिक तथा संस्थाओं की शांति संबंधी शक्ति में वृद्धि करना इत्यादि होता है तथा इस उद्देश्य की पूर्ति में सूचना संप्रेषण तकनीक की भूमिका वर्तमान दौर में निर्णयात्मक साबित हो सकती है।

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

समय के साथ शांति की आवश्यकता ज्यादा जरूरत महसूस हो रही है, और इसी अनुरूप सूचना संप्रेषण तकनीक की भूमिका बढती जा रही है।

संदर्भ ग्रंथ

[1]. भगवत गीता श्लोक संख्या 66 अध्याय 2, गीताप्रेस, गोरखपुर, सन् 2014।
[2]. UNICEF Rwanda.1997. Education for Peace-Rewanda.
[3]. http// www.mkgandhi.org/views_edu/views edu.htm.
[4]. http//www.peaceclubs.org.
[5]. What is Peace Education-NCTE www.ncte-india.org/pub/UNESCO
[6]. आतंकवादी की शिकार मलाला द्वारा नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के अवसर पर दिया गया भाषण से उद्धर्त।
[7]. Daniel S.et.al, 2015. Information and Communication Technology for Peace: The Role of ICT in Preventing, Responding to and Recovering from Conflict. The United nation Information and Communication Technologies Task Force. New York. NY: One United Nations Plaza.
[8]. Gandhi, M.K. 1948 Non-Violence. Peace and War [Volume-] Ahmedabad: Navjivan Publishing House.
[9]. National Focus group on Education for Peace NCERT, 2006.
[10]. राजस्थान पत्रिका में पृष्ठ 1 पर समाचार दिनांक 11 अक्टूबर, 2015।
[11]. सक्सेना, एन.आर. स्वरूप व कुमार संजय, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
[12]. World Summit on the Information Society. 2015, November 18 as the Tunis Agenda.
[13]. Communication Imperialism and Dependency : A Conceptual Approach in the Gazette : The International Journal of Mass Communication Studies [41], 69-83
[14]. Hicks, D.1985. Education for Peace: Issues, Dilemmas and Alternatives. Lancaster St: Martin College.
[15]. Wehrenfenning, D. 2207. Do You Hear Me Now ?- The Use of Modern Communication Technology for Conflict Management a paper presented at the Annual Meeting of the International Studies Association 48 th Annual Convention of February 28,2007, Hilton Chicago, CHICAGO, II, USA Online P 1-12
[16]. Learning to Live Together: Building Skills, Values and Attitude for the twenty-first Century.2004. Margrate Sinchair, UNESCO IBE.
[17]. Mishra, Anil Dutta [ed]. 1996. Gandhian Approach to Contemporary Problems, New Delhi: Mittal Publication.
[18]. Kumar, Ravindra. 2011. Resolving Conflicts: The Gandhian way. Meerut : World Peace Movement Trust http:// worldpeacemovement.blogspot.in/20 11/07/ Gandhi –on-value-education-dr-ravindra.html
[19]. The Art of Living in Peace: Guide to Education for a Culture of Peace. 2002, UNESCO/ Council of Europe/ CEPS.
[20]. www.ncte-india.org

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**